कुछ टटोलती तनिक भटकी, और फिर, दरवाजे के निकट लगी किसी खूँटी से कोई कुरती उतार हवा हो गयी।

कक्ष की लंबाई चीरती कोई वयोवृद्ध परिचारिका पर्दा उठा बाहर चली गयी। टेट्रार्ख के मन में सहसा कोई स्मृति कौंधी।

''वह स्त्री तुम्हारी कोई दासी है?'' उसने पूछा।

''तुम्हें क्या मतलब?'' हेरोडिऑस ने तिरस्कार भरा जवाब दिया।

-तीन-

विशाल दावतखाना मेहमानों से अट गया था। महल के इस खंड में किसी बेसिलिका (लंबे आयताकार हाल) समान तीन नेव (जहाज रूपी कक्ष) थे जो चंदन के ऐसे स्तंभों से पृथक-पृथक होंगे कि जिनके शिखर काँस्य मूर्तियों से सजे थे। खंड के दोनों सिरे दर्शक दीर्घाएँ थीं; और तीसरा सिरा कि जिसका अग्रभाग सोने की जरदोज़ी से अलंकृत होगा, वह-सुदूर सिरे निर्मित अत्यंत विशाल मेहराब के सामने था।

दावतखाने की पूरी लंबाई नाप रहे प्रज्ज्वलित दीपदान मेजों के ऊपर-रंगबिरंगे प्यालों, पीतल की चमचमाती तश्तरियों, बर्फ के टुकड़ों, और मधुर अंगूरों के गुच्छों के अनंतर-आलोकित पुष्पकुंजों समान झलक रहे थे। लंबी-चौड़ी खिडकियों में से पड़ोसी मकानों की छतों के ऊपर प्रदीप्त मशालों को देखा जा सकता था, क्योंकि इस रात एंटिपास ने मित्रों, नगर निवासियों, और, महल निकट आ पहुँचे हर किसी को दावत का न्योता दे रखा था।

कुत्तों समान चौकन्ने दास फेल्ट-निर्मित पादुकाएँ पहने-पहने, तश्तरियाँ उठाये एक से दूसरे कोने सरकते जा रहे थे।

प्रोकौंसल की मेज-सोने का मुलम्मा चढ़ी बालकनी तले -गूलर की लकड़ी के बने चबूतरे पर स्थित थी। मण्डप में इतस्ततः लटक रहीं भव्य टेपिस्ट्रियों से किसी किस्म की विविक्ति का माहौल महसूस हो रहा था।

विशाल कक्ष के सम्मुख एक, और, मण्डप के दोनों पार्श्व पर एक-एक, ऐसी तीन आइवरी काऊचों पर वाइटेलियस, उसका पुत्र आउलॅस, और एंटिपास आराम से बैठे थे। दरवाजे के निक ट, बाँयी ओर वाइटेलियस, दाँयी ओर ऑउलस, तथा एंटिपास टेट्रार्ख बीच में, अपनी-अपनी काऊचों पर आसीन थे।

रंगीन कशीदाकारियों और चमचमाती सजावटों से प्रायः पूर्णतः आच्छादित जिसका टेक्सचर होगा ऐसा कोई लंबा-चौड़ा भारी-भरकम स्याह चोगा पहने एंटिपास की दाढ़ी किसी पंखे समान फैली थी; उसके केशों पर नीला पावडर छिड़का हुआ था; और, सिर पर बेशकीमती रत्नों से जड़ा मुकुट फँसा था। वाइटेलियस अभी तक भी पीताभ फीता धारा हुआ था; उसका ओहदा किसी लीनन चोगे पर तिर्यक-क्रास बना रहे किसी प्रतीक से प्रगट हो रहा था।

रजत-कशीदाकारी किये हुए अपने बैंजनी चोगे की आस्तीनें पीठ पर कसे हुए ऑउलस के गुच्छेदार घुंघराले केश बड़े सलीके से पंक्तिबद्ध थे; गले में गोल गोल सफेद मणियों की- स्त्रियों द्वारा वापरी जाती, वैसी-माला चमक रही थी। उसके निकट, किसी कम्बल पर, एक बना-ठना छैला पलथी मार दुबका बैठा था; उसके चेहरे पर अनवरत मुस्कान खिली हुई थी। रसोईघरों में कहीं वह ऑउलस की नजर इस कदर आ चढ़ा कि उसके प्रति वह प्रगाढ़ आकर्षण से जा भरा। उसने बच्चे को अपने परिचरों में शामिल कर लिया, हालाँकि वह अपने इस आश्रित का काल्डियाई नाम कभी नहीं याद रख पाया, सो, उसे 'एशियाटिक' कह कर ही पुकारता। बीच-बीच वह उचक कर दावत की मेजों के इधर-उधर मटकता तब उसकी पुराकालीन हरकतें अतिथियों का मन बहलातीं।

टेट्रार्ख के मण्डप के एक सिरे विन्यस्त मेजों पर उसी के पुरोहित और अधिकारी, जेरूसलेम से तशरीफ लाये कुछ एक लोग, तथा, यूनानी नगरों के कई एक ज्यादा ही महत्वपूर्ण व्यक्ति बैठे थे। प्रोकौंसल के बायीं बाजू रखी मेज पर पटवारियों संग मार्सेलस, टेट्रार्ख के कतिपय मित्रगण; और, काना, प्टोलेमाईस तथा जेतिचों से तशरीफ लाये अनेक नुमाइंदे आसीन थे। अन्य मेजों पर लिबान के पर्वतारोही तथा हेरोड की सेना के कई एक फौजी; दर्जन भर थ्राशियाई, एक यूनानी और दो जर्मन; इनके अतिरिक्त, शिकारी और गड़रिये, पालमायरा का सुल्तान, और ईजीऑगेबर के सैलानी विराजमान थे। प्रत्येक मेहमान के समक्ष-उँगलियाँ साफ करने के लिए-एक वृत्ताकार रोटी रखी थी। उनके बैठते ही, किसी गिद्ध के पंजों की उत्कंठा भरे हुए हाथ जैतून, पिश्ता, बादाम आदि मेवों पर झपट पड़े। हर चेहरा प्रसन्न था; हरेक ने सिर पर फूलों का मुकुट सजाया था, सिर्फ फेरिज़ीज़ को छोड़, जिन्होंने हार फूल पहनना-रोमन ऐयाशी और दुर्गुण मान- नकारा हुआ था। परिचारकों ने जब उन पर गेलबर्नम और लोबान का छिड़काव किया तब वे थरथराए, क्योंकि उन्होंने उनके इस्तेमाल को, मन्दिर के अनुष्ठान के अतिरिक्त, पूरी सख्ती से वर्जित करार दिया हुआ था।

एंटिपास ने गौर किया कि ऑउलस ने भुजाओं के नीचे यों खुजाला मानो गर्मी, या फिर हँसी-मजाकों की आवाजों से चिढ़ रहा हो। झट उठ निकट जा उसने उसी किस्म के बेशकीमती मल्हम को बुलवाने का वचन दिया कि क्लिओपेट्रा जिसका इस्तेमाल करती थी।

ताइबेरियस की सेना का हाल पहुँचा कोई कप्तान सरपट दौड़-कहीं कोई अप्रत्याशित हंगामा न आ खड़ा हो जाये, इस ख़तरे के मद्देनजर- टेट्रार्ख के पीछे, बॉडीगार्ड की तरह जा तैनात हो गया। हालाँकि उसका ध्यान कभी प्रोकौंसिल की गतिविधियों तो कभी पड़ोसियों की गपशपों में जा रमा।

माहौल के अनुकूल, प्रायः सारी चर्चाएँ लेओकनान और उसी के जैसे अन्य व्यक्तियों पर जमी रहीं।

''ऐसा कुछ सुना गया'', कोई एक अतिथि बोला,''कि सायमन ऑफ गिट्टा